PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 9, ISSUE 1

छात्रो की रचनात्मकता के लिए कारगर: भारतीय संगीत

प्रा. अनिता शर्मा
सहायक प्राध्यापिका
संगीत विभाग
दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय,
नागपूर. (महाराष्ट्र) भारत

सारांश:

संगीत मानव जाति के लिए सबसे बड़ा उपहार है। मानव संस्कृति के विकास के साथ-साथ संगीत का भी विकास हुआ है। संगीत प्रकृति में एक सुंदर रचना है. आज संगीत जीवन का अभिन्न अंग है। काम की रोजमर्रा की भागदौड़, चिंता की आग और जीवन की एकरसता में केवल संगीत ही जीवंतता का काम करता है! संगीत ने हमारे जीवन को सहनीय बना दिया है। संगीत का अध्ययन करने से मस्तिष्क के काम करने का तरीका बदल जाता है। इसके परिणामस्वरूप अधिक सक्रियता और ताकत आती है। एक अध्ययन से पता चला है कि संगीत सुनने से उनकी सोचने की क्षमता, समझ, रचनात्मकता, एकाग्रता और याददाश्त का विकास आसान होता है। प्राचीन रोमन और ग्रीक काल में, बच्चों को विभिन्न प्रकार की भावनाओं, संवेदनाओं और रचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए संगीत सिखाया जाता था। अगर हम आज की पीढ़ी को रचनात्मक और जिम्मेदार बनते देखना चाहते हैं तो उनमें स्कूली उम्र से ही संगीत की शिक्षा डालना जरूरी है।

बिज-शब्द: संगीत की शिक्षा, रचनात्मक दृष्टिकोण,भावना, संवेदना

प्रस्तावना:

यदि स्वर वह अनुभूति है जो भावनाओं को संगीत में अभिव्यक्त करती है, तो लय या ताल वह चेतना है जो उसे चेतना और उत्साह से भर देती है। चूँकि ध्वनि एक शारीरिक गतिविधि है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि यह मस्तिष्क, हृदय और पूरे शरीर को प्रभावित करती है। जब संगीत की मधुर तान या सुर कानों पर पड़ते हैं तो शरीर से तनाव स्वत: निकल जाता है और मन तो शांत होता ही है साथ ही ध्यान की अनुभूति भी होती है। इसीलिए संगीत में ध्वनियों और स्वरों को 'मंत्रशक्ति' कहा जाता है। यही कारण है कि सभी आध्यात्मिक केंद्रों में ध्यान की तकनीकें और विधियां इसी संगीत पर आधारित हैं। प्रयोगों द्वारा यह भी सिद्ध हो चुका है कि संगीत हमारे शरीर में प्रसन्नता, स्फूर्ति, ऊर्जा, शारीरिक शक्ति का संचार करता है तथा शरीर में प्राण वायु को बढ़ाता है जिससे मानसिक संतुष्टि, स्थिरता, शांति, दया, प्रेम, करूणा, उदारता, क्षमा, आत्मीयता तथा सौजन्यता आती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की ध्वनियों और स्वरों का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग कैसे किया जाए, इस पर दुनिया भर में बहुत सारे शोध किए गए हैं और यह दिखाया गया है कि संगीत के माध्यम से विभिन्न बीमारियों का इलाज संभव है। आज के तनावपूर्ण जीवन परिवेश में चाहे विद्यार्थी हों या युवा पीढ़ी; चाहे पुरुष हों या महिलाएँ जो नौकरीपेशा हैं या व्यवसाय में लगे हुए हैं, भारतीय शास्त्रीय संगीत वास्तव में सभी को स्वस्थ जीवन देने के लिए एक जीवनरक्षक है। अत: यदि स्कूली जीवन से ही ऐसे संगीतमय वातावरण को उनकी शिक्षा व्यवस्था में शामिल कर लिया जाए तो इसमें कोई संदेह नहीं कि कल का भारत और कल की आने वाली पीढ़ी निश्चित ही रोगमुक्त, तनावमुक्त, अधिक रचनात्मक होगी।

संगीत कि उपादेयता:

- **पूजा और संगीत** :

  विभिन्न जातियों और धर्मों में पूजा के लिए विभिन्न प्रार्थनाओं की योजना बनाई जाती है। यदि दैनिक जीवन जीते हुए इन प्रार्थनाओं को संगीत की सहायता से गाया जाए, तो निश्चित रूप से सही परिणाम प्राप्त होता है। चाहे मंदिर में भजन, कीर्तन हो या मस्जिद में अज़ान; चाहे गुरुद्वारे में गुरुबाणी हो या चर्च में गाई जाने वाली प्रार्थना, यह पूजा सप्तसुरों के साथ होती है। इसीलिए हमें उस अलौकिक शक्ति का अहसास होता है।

- **मनोरंजन के लिए संगीत** :

  यद्यपि भोजन, कपड़ा और मकान मनुष्य की बुनियादी जरूरतें हैं, फिर भी उसे मनोरंजन की भी जरूरत है। 'रंजको राग चित्तनम्।' जब कोई व्यक्ति ऊब जाता है, थक जाता है। ऐसे समय में उनकी थकान दूर हो जाती है और चेतना जागृत हो जाती है। ऐसे समय में संगीत उनका अच्छा मनोरंजन करता है और वह आगे के काम संभाल सकते हैं। इस प्रकार संगीत मनोरंजन के लिए भी उपयोगी है।

- **परिश्रम से बचने के लिए संगीत :**

  यदि आप परिश्रम करते समय संगीत सुनेंगे तो आपको परिश्रम का अनुभव नहीं होगा। संगीत सुनते समय यदि कोई उबाऊ काम किया जाए तो वह तेजी से हो जाता है। पहले महिलाएं जब अनाज पीसती थीं तो संगीत गाती थी और तो प्रसव पीड़ा से बचने के लिए भी गाती थीं। किसान अलग-अलग कार्य करते समय अलग-अलग गीत गाते हैं। इस प्रकार श्रम से बचने के लिए संगीत एक बेहतरीन माध्यम है।

❖ **मन की शांति के लिए संगीत :**

इस तेज रफ्तार युग में मन की खोई हुई शांति को वापस पाने के लिए संगीत जैसा कोई माध्यम नहीं है। हमारा शरीर और मन हर दिन अनगिनत आघातों का शिकार होता है। इसे सहने की शक्ति संगीत से आती है। संगीत हमें हमारी भूख भूला देता है। हम दर्द और पीड़ा के बारे में भूल जाते हैं। संगीत की ध्वनि तरंगों से ध्यान सुगम होता है। विचलित मन को शांत करने में संगीत बहुत मददगार है।

❖ **आनंद के लिए संगीत :**

यद्यपि मनुष्य खुशी के लिए सब कुछ करता है, लेकिन संगीत से मिलने वाली खुशी अलौकिक होती है। संगीत हमें खुशी के चार पल देता है। कुछ देर के लिए तो हम गम भूल जाते हैं. संगीत के सान्निध्य में रहने के बाद वह स्थान समय को भूल जाता है। इसीलिए संगीत का आनंद दुसरे किसी भी आनंद से परे है।

❖ **एकाग्रता, स्मृति और संगीत :**

संगीत साधना का विषय है। संगीत का अभ्यास करने से एकाग्रता में सुधार होता है। इसमें स्वरों को रटन करने, स्वरों का विस्तार करने, लयबद्ध पैटर्न में हेरफेर करने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है। वहीं संगीत सात सुरों पर आधारित है। संगीत के अध्ययन से याद रखने की क्षमता, समझ और स्मृति का विकास होता है। इसके अलावा, तबले में कुछ शब्द समान हैं, इन्हें

अलग-अलग लय और शैलियों में बजाने से एकाग्रता और याददाश्त में सुधार होता है।

❖ **राष्ट्रीय एकता और संगीत:**

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक देशभक्ति गीतों का प्रयोग किया गया। जब कई लोग एक समूह में देशभक्ति के गीत गाते हैं तो वे बाकी सारी बातें भूलकर एक साथ आ जाते हैं। उनमें सामूहिक भावना जागृत होती है और राष्ट्रीय एकता बढ़ती है।

❖ **प्रोत्साहित करने के लिए संगीत :**

स्कूल की शुरुआत में बच्चे प्रार्थना गाते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत गीत गाया जाता है। नाटक की शुरुआत नांदी से होती है। डोंबारी, मदारी और गरुड़ी अपना प्रदर्शन शुरू करने से पहले विभिन्न वाद्ययंत्र बजाते हैं। पहलवानों को प्रोत्साहित करने के लिए हल्गी बजाया जाता है। उससे एक वातावरण बनता है। वह भक्ति का माध्यम था, लेकिन आज वही संगीत दैनिक, जीवनोपयोगी वस्तुओं तक पहुंच गया है। निर्माताओं को अपने उत्पादों को जन-जन तक प्रचारित करने के लिए आकर्षक विज्ञापन बनाने पड़ते हैं। यदि यह विज्ञापन संगीतमय है तो ही इसका प्रभाव उपभोक्ता पर पड़ता है। इस प्रकार संगीत संबंधी विज्ञापन संबंधित उत्पादों की बिक्री बढ़ाने में उपयोगी होते हैं।

❖ **प्रकृति एवं संगीत :**

प्रकृति ही मनुष्य की प्रथम गुरु है! चराचर में संगीत शामिल है। मनुष्य ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रकृति की विभिन्न ध्वनियों का

अनुकरण किया है। संगीत की अनुभूति सुबह की ठंडी हवा की गुनगुनाहट, वसंत की कलकल, पक्षियों की चहचहाहट, बिजली की कड़क, बादलों की गड़गड़ाहट, दिल की धड़कन, नाड़ी की धड़कन से आती है। शायद यही गायन, वादन और नृत्य की शुरुआत थी।

छात्रो की रचनात्मकता और संगीत:

आज स्कूली बच्चों और उनके माता-पिता के लिए सफलता की परिभाषा है अच्छे अंक लाना और फिर जीवन के पंचमभूतों के रूप में सीए, इंजीनियर, डॉक्टर, एमबीए, आर्किटेक्ट के साथ अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी पाना और दस-बारह काम करने के बाद सप्ताहांत पर बाहर जाने का आनंद लेना। इसी सोच के कारण आज की पीढ़ी में स्वार्थ, आत्मकेंद्रितता, एकरसता और आपराधिकता बढ़ती जा रही है। आज भी स्कूलों में संगीत शिक्षकों को दुय्यम दर्जे का माना जाता है; क्योंकि गणित और विज्ञान जैसे विषय केवल छात्रों के लिए महत्वपूर्ण हैं और बाकी सिर्फ टाइम पास के लिए हैं, इसका प्रभाव बच्चों और अभिभावकों पर भी पड़ रहा है और अभिभावक भी इन विषयों पर जोर देते हैं। यही सोच आज स्कूल चलाने वाले कई प्रशासकों में भी देखी जाती है। यही कारण है कि आज कई बच्चों में मानसिक तनाव और उससे जुड़ी सीखने की अक्षमता, धीमी गति से सीखने और अनियंत्रित गुस्सा, फिर उसका अपराध और अन्य मानसिक बीमारियों में तब्दील होना तेजी से बढ़ रहा है। बच्चों की बौद्धिक क्षमता और किसी बात पर स्वयं सोचने और उसका समाधान ढूंढने की क्षमता ख़त्म होती नज़र आ रही है। क्योंकि आज हम देखते हैं, लगभग हर विषय में, बच्चे तैयार सामग्री का उपयोग करने के आदी हैं, चाहे वह उत्तर के रूप में हो या गणित को हल करने की विधि के रूप में, छात्र हमेशा सुनिश्चित रटे हुए बिंदुओं की सामग्री प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसमें यदि वे अपनी पद्धति या कोई नया मुद्दा प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं तो उसे अस्वीकार कर दिया जाता है और संबंधित व्यक्ति उन्हें सिखायी गयी

पद्धति अपनाने के लिए बाध्य करते हैं। इसलिए यह दोबारा बताने की जरूरत नहीं है कि समान विषयों में कितने बच्चों का कार्य अनुभव या प्रोजेक्ट बच्चों ने खुद पूरा किया, या इसमें 99 फीसदी अभिभावक शामिल रहे. इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि वे परियोजनाएँ मूल रूप से बच्चों की रचनात्मकता को गुंजाइश नहीं दे रही हैं, बल्कि वे संबंधित स्कूलों को सुंदर बनाने वाली परियोजनाएँ हैं। लेकिन महाराष्ट्र के कुछ स्कूलों में जहां संगीत का विषय आज भी जीवित है, कितने माता-पिता बच्चों को प्रोजेक्ट या कार्य अनुभव के रूप में दिए गए गीत, कविता या कुछ लयबद्ध मनोरंजन को पूरा करते हैं या उसमें रुचि लेते हैं और बच्चों की मदद करते हैं? मूलतः, बच्चों को ऐसी चीज़ों में माता-पिता की आवश्यकता नहीं होती; क्योंकि इसमें वे अपनी रचनात्मकता दिखा सकते हैं और इसीलिए प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि संगीत कक्षा के दौरान बच्चे सबसे अधिक उत्साहित होते हैं। लेकिन शिक्षा के प्रति आज के समाज की मानसिकता सिर्फ बड़ी नौकरी पाने के लिए कड़ी मेहनत करने की है। इसी सोच का नतीजा है कि आज बच्चों की मासूमियत कहीं खोती नजर आ रही है। यदि हम इस विषय को सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो छात्रों के मन में सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि आज की पीढ़ी के छात्र जो इन सांस्कृतिक परंपराओं में पले-बढ़े हैं, वे कल के युवा सामाजिक तत्व बनने जा रहे हैं। इसलिए समय-समय पर छात्रों में ऐसे मूल्यों का विकास करना अधिक महत्वपूर्ण है, जो आसानी से छात्रों तक पहुंचाए जा सकें, ताकि मानवता को बनाए रखा जा सके और इंसान को एक मशीन या उपकरण बनाने के बजाय इंसान के रूप में समझा जा सके ना कि रोबोट बनाकर पैसे कमाएं. इसलिए, संगीत आज की स्कूली शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों को प्रदान करने का एक आसान, सरल और प्रभावी माध्यम है। क्योंकि सांस्कृतिक संस्कार जितने कम होंगे, युवा पीढ़ी का मन उतना ही आस्थाहीन, असंवेदनशील और सर्वथा विचारहीन एवं पथभ्रष्ट प्रतीत होता है। इसीलिए आज स्कूल स्तर पर हर स्कूल में संगीत अनिवार्य है और स्कूल स्तर से ही संगीत के माध्यम से

बच्चों को ऐसे संस्कार दिए जाने चाहिए जिससे उनमें एकाग्रता, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता, धैर्य, मानसिक स्थिरता जैसे कई गुणों को विकसित करना बहुत आसान हो जाए। संगीत में इतनी शक्ति है कि यह नवरस उत्पन्न करता है और इसके माध्यम से विभिन्न भावनाओं को देखा जा सकता है और ध्वनियों के माध्यम से आध्यात्मिक शक्ति को महसूस किया जा सकता है।

समारोप:

प्राचीन रोमन और ग्रीक काल में बच्चों को पहले केवल तीन विषय पढ़ाये जाते थे 1. व्यायाम 2. तर्क 3. संगीत। फिटनेस और स्वास्थ्य के लिए व्यायाम, सही सोचने की क्षमता और बुद्धि के विकास के लिए तर्क और विभिन्न भावनाओं, संवेदनाओं और रचनात्मकता के विकास के लिए संगीत सिखाया गया। जिन देशों ने संगीत के महत्व को समझा वे आज महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर हैं। आज पूरी दुनिया हमारे देश की दो ऐसी महत्वपूर्ण चीजों के सामने नतमस्तक है और वह है हमारी 'आध्यात्मिकता' और हमारा 'भारतीय शास्त्रीय संगीत'। अत: शास्त्रीय संगीत की विरासत वाले हमारे देश भारत में भावी पीढ़ी के निर्माण की दृष्टि से इस पर विचार करते हुए बचपन की अस्थिर एवं चंचल अवस्था के सभी मनों को अध्ययन के वातावरण में एक साथ लाकर उनकी बौद्धिकता प्रदान की जाए। मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर अच्छे विचारों का मिलन, कल का सर्वांगीण विकास, एक संवेदनशील, रचनात्मक व्यक्ति बनेगा। यदि ऐसी जिम्मेदार पीढ़ी देखनी है तो आवश्यक है कि वे संगीत की शिक्षा प्राप्त करें।

संदर्भ-सूची:

- शर्मा जया- पंडित भातखण्डे के ग्रन्थों का संगीत शिक्षण में योगदान - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2012(वर्ष)
- नाहर कुमार साहित्य- भारतीय संगीत मनोवैज्ञानिक आयाम- प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली (वर्ष-1999)
- शर्मा स्वतंत्र- भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण-- अनुभव पब्लिकेशन इलाहाबाद (वर्ष-2014)
- बनर्जी कुमार आसित- हिन्दुस्तानी संगीत: परिवर्तनशीलता शारदा पब्लिशिंग (वर्ष-1992)
- गौतम अनीता- भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (वर्ष-2002)
- जौहरी रेनू- संस्मरण (तबले के जादूगर पद्मभूषण पं समता प्रसाद जी कि स्मृति में - अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद (वर्ष-2015)